पृथ्वी पर जीवन की कहानी

निकोलस हैरिस, चित्र : निकी पॉलिन



पृथ्वी पर जीवन की कहानी

निकोलस हैरिस, चित्र : निकी पॉलिन



लाखों, करोड़ों, अरबों साल पहले...

हमारी दुनिया में कोई भी नहीं रहता था.

कोई लोग नहीं थे. कोई जानवर नहीं. कोई पेड़ नहीं. कोई घास नहीं. समुद्र में कोई मछली भी नहीं.

जमीन पर सिर्फ चट्टानें थीं.

हवा गरजती थी, बिजली कड़कती थी, और लहरें समुद्र के किनारे से आकर टकराती थीं .

लेकिन न पक्षी गाते थे, न सिंह दहाड़ते थे, न पेड़ों में पत्तों की सरसराहट होती थी.

लाखों, करोड़ों, अरबों साल बाद...



..... समुद्र के नीचे कुछ हलचल हुई.

सबसे पहले, छोटी जेलिफ़िश पानी में तैरने लगीं.
कीड़े, कीचड़ में इधर-उधर घूमने लगे.

तभी कुछ बहुत ही अजीब जीव दिखाई दिए.
कुछ के बहुत सारे पैर थे और वे समुद्र की तलहटी पर तैरते थे.

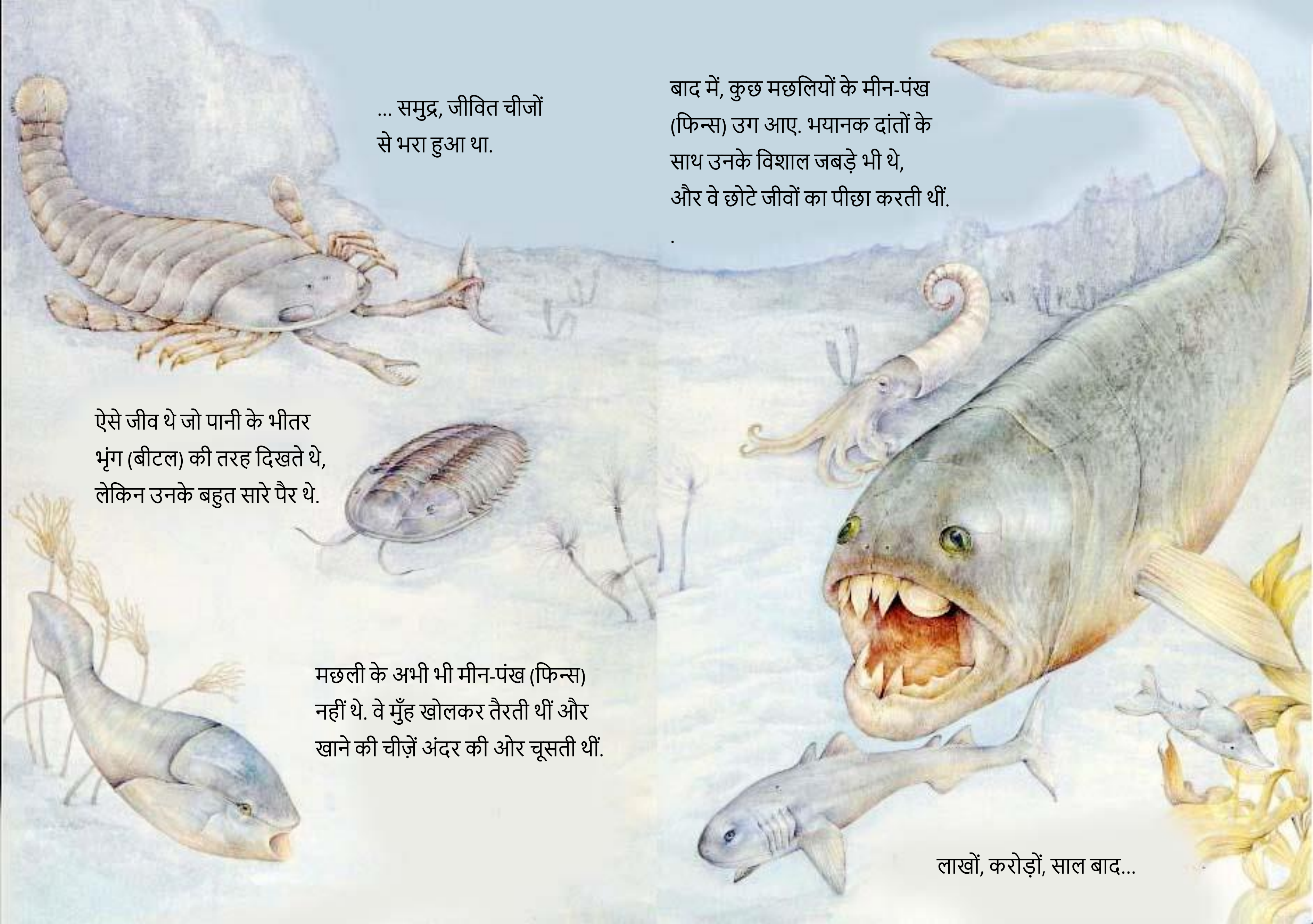
कुछ में स्पाइक्स (कांटे) थे और वे बहुत धीरे-धीरे रेंगते थे.

एक के सिर पर मशरूम के आकार की पांच आंखें थीं
और उसकी बांह के सिरे पर दांत थे.

एक ऐसा था जो लगभग मछली जैसा दिखता था,
लेकिन उसके कोई मीन-पंख (फिन्स) नहीं थे.



लाखों, करोड़ों, अरबों साल साल बाद ...



... समुद्र, जीवित चीजों
से भरा हुआ था.

ऐसे जीव थे जो पानी के भीतर
भृंग (बीटल) की तरह दिखते थे,
लेकिन उनके बहुत सारे पैर थे.

मछली के अभी भी मीन-पंख (फिन्स)
नहीं थे. वे मुँह खोलकर तैरती थीं और
खाने की चीज़ें अंदर की ओर चूसती थीं.

बाद में, कुछ मछलियों के मीन-पंख
(फिन्स) उग आए. भयानक दांतों के
साथ उनके विशाल जबड़े भी थे,
और वे छोटे जीवों का पीछा करती थीं.
.

लाखों, करोड़ों, साल बाद...



. . जमीन पर कुछ हो रहा था. वहां पौधे उगने लगे थे.

शुरू में पौधे समुद्र के किनारे-किनारे उगते थे.

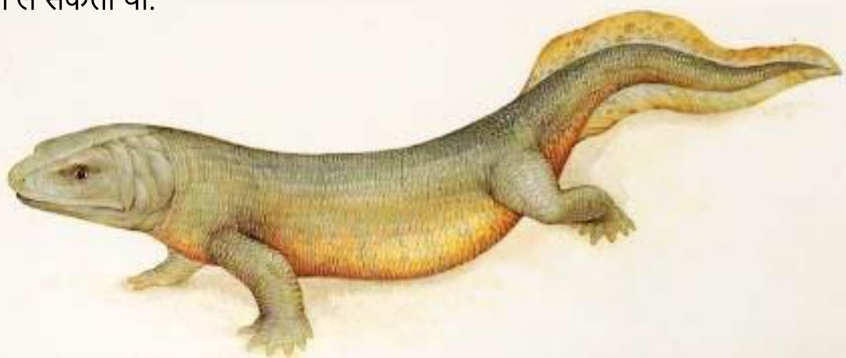
लेकिन फिर वे आगे ज़मीन पर अंदर की ओर फैलने लगे.

जो ज़मीन कभी पथरीली और बंजर थी वो आखिर में हरी-भरी हो गई.

पौधों को कीड़े और खौफनाक-रेंगने वाले जीव खाते थे.
झीलों और नालों में तैरने वाली कुछ मछलियाँ पौधों को खाने लगीं.

यहां तक कि कुछ मछलियाँ सबसे बड़े, रसीले कीड़ों को पकड़ने के लिए पानी से बाहर भी निकलीं.

उनके मीन-पंख (फिन्स) इतने मजबूत और मोटे थे कि वे पैरों की तरह थे. कुछ मछलियां जमीन पर चल सकती थीं और वे ताजी हवा में सांस भी ले सकती थीं.





लाखों, करोड़ों साल बाद...

... कुछ मछलियों ने पाया कि वे लगभग हर समय जमीन पर रह सकती थीं.

उनके मीन-पंखों में पैरों की उंगलियां थीं जो उनकी चलने में मदद करती थीं. मछलियों जैसी सपाट पूंछ के बजाए, उनकी लंबी, सीधी पूंछ थी.

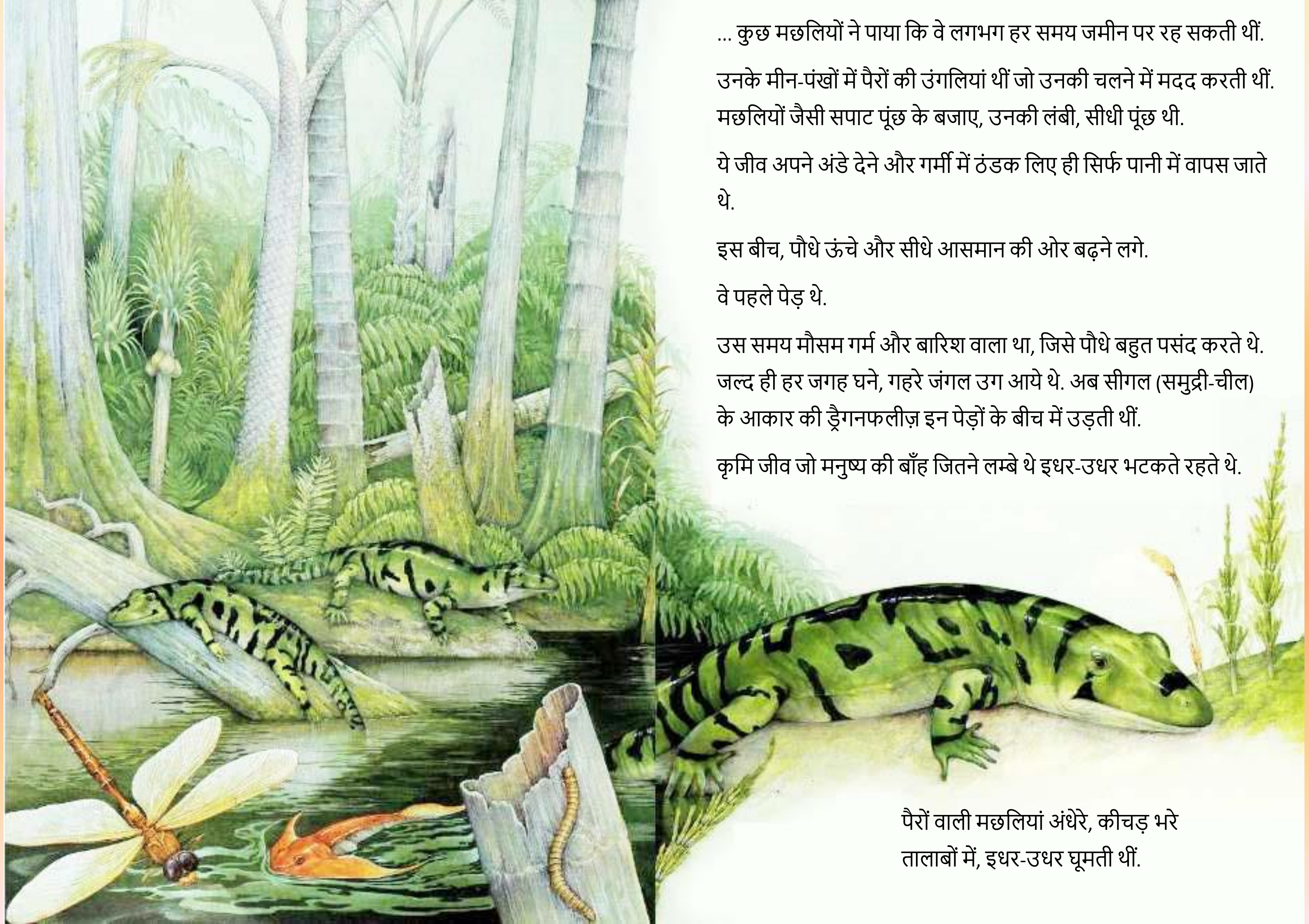
ये जीव अपने अंडे देने और गर्मी में ठंडक लिए ही सिर्फ पानी में वापस जाते थे.

इस बीच, पौधे ऊंचे और सीधे आसमान की ओर बढ़ने लगे.

वे पहले पेड़ थे.

उस समय मौसम गर्म और बारिश वाला था, जिसे पौधे बहुत पसंद करते थे. जल्द ही हर जगह घने, गहरे जंगल उग आये थे. अब सीगल (समुद्री-चील) के आकार की ड्रैगनफलीज़ इन पेड़ों के बीच में उड़ती थीं.

कृमि जीव जो मनुष्य की बाँह जितने लम्बे थे इधर-उधर भटकते रहते थे.



पैरों वाली मछलियां अंधेरे, कीचड़ भरे तालाबों में, इधर-उधर घूमती थीं.



इस बीच, ऊंचे पेड़ की शाखाओं में, एक छोटा जानवर इधर-उधर भागने लगा था.

पैरों वाली मछलियों की तरह, उसका शरीर भी लंबा और चिकना था.
लेकिन वो छिपकली की तरह दिखता था.

उसने जमीन पर अंडे देना सीख लिया था.

अब उसे पानी में बिल्कुल भी समय नहीं बिताना पड़ता था.

वो पहला सरीसृप था.

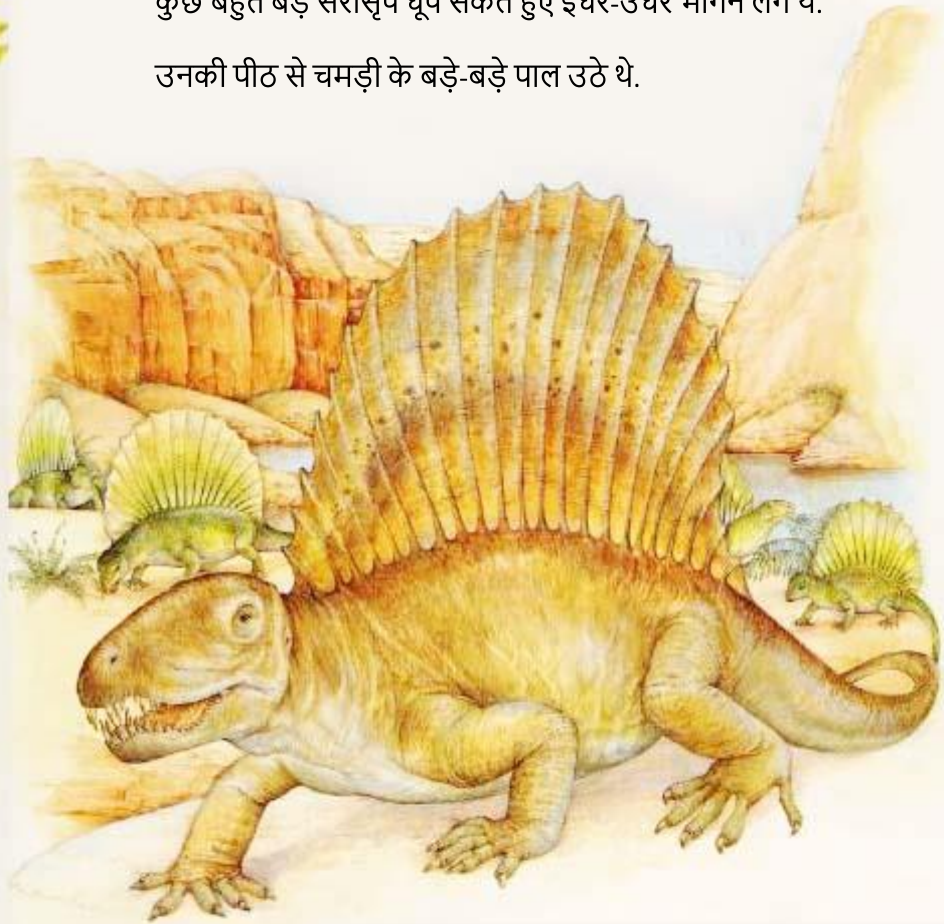
लाखों, करोड़ों साल बाद...

जंगल गायब हो गए.

अभी भी बहुत गर्मी थी. लेकिन अब बहुत ज्यादा सूखा था.

कुछ बहुत बड़े सरीसृप धूप सेंकते हुए इधर-उधर भागने लगे थे.

उनकी पीठ से चमड़ी के बड़े-बड़े पाल उठे थे.



लाखों, करोड़ों साल बाद...

.....कई अलग-अलग प्रकार के सरीसृप थे.



कुछ के मोटे, हड्डी
वाले शरीर और
नुकीले सिर थे.

कुछ के लम्बे दांत थे और वे
सूअरों की तरह सूंघते थे.



कुछ के लंबे पैर थे और वे
बहुत तेज दौड़ सकते थे.



कुछ काफी छोटे थे
और उनकी चमड़ी
बालों वाली थी.



लंबी टांगों वाले सरीसृपों ने पाया कि वे सीधे खड़े होकर ओर भी तेज़ी से दौड़ सकते थे.

इसलिए, वे अपने दो पिछले पैरों पर चलने लगे.

लंबी पूंछ संतुलन बनाए रखने में उनकी मदद करती थी.
उनके हाथ छोटे और मजबूत थे, खाने की चीजों को पकड़ने के लिए अच्छे थे.

वे पहले डायनासोर थे.



डायनासोर ने लाखों वर्षों तक दुनिया पर राज किया.

उनकी कुछ प्रजातियां समाप्त हो गईं, लेकिन उनकी जगह नई प्रजातियों ने ली.

डायनासोर सभी आकारों के थे. कुछ बहुत विशाल - एकदम भीमकाय थे.

उनकी बहुत लंबी गर्दन और लंबी पूंछ थी.
कुछ की लम्बाई तीन खड़ी तीन बसों से अधिक थी.

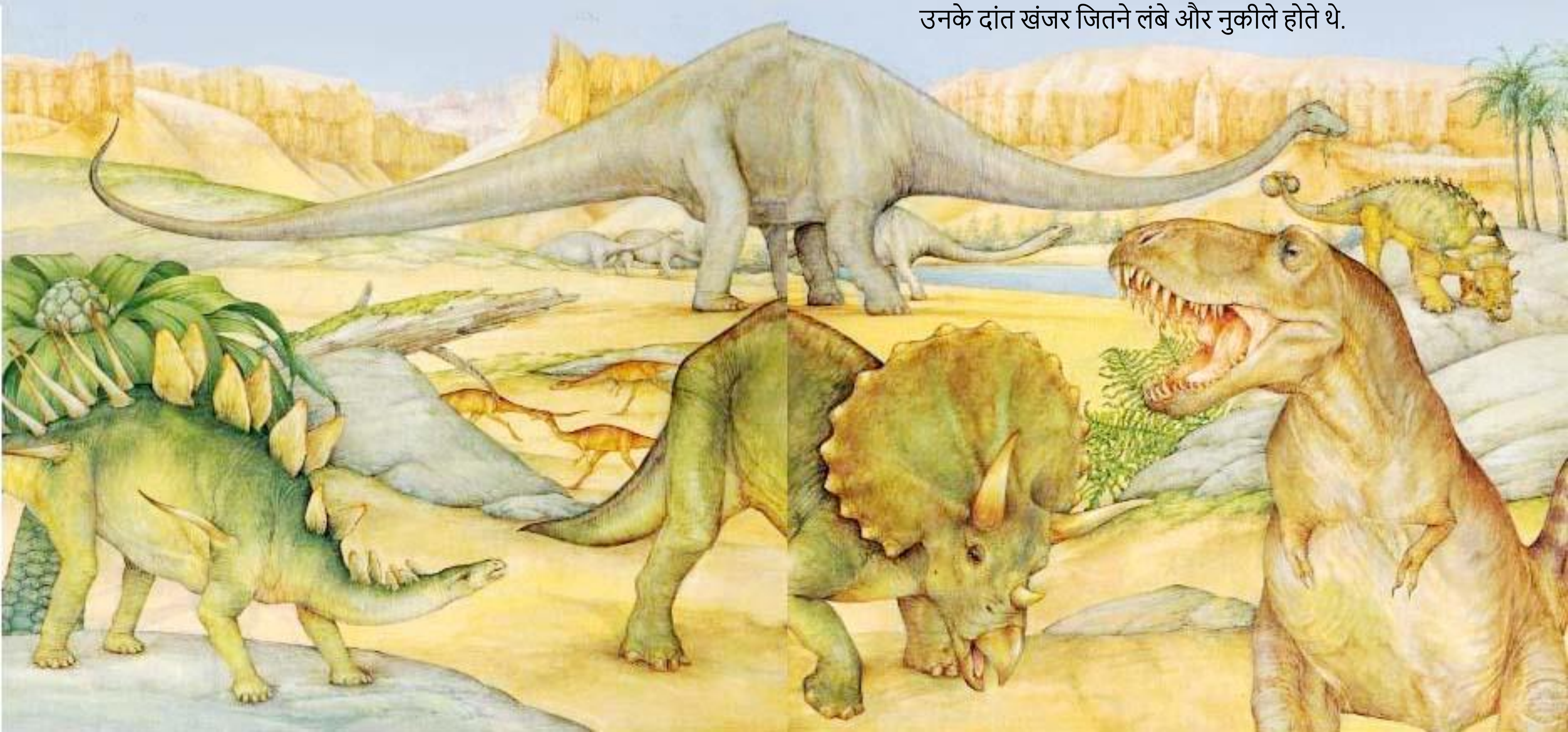
कुछ डायनासोर काफी छोटे थे, वे बिल्लियों जितने बड़े थे.

डिप्लोडोकस जैसे डायनासोर एकदम कोमल प्राणी थे.
वे पूरे दिन सिर्फ पत्तियां चबाते थे.

कुछ डायनासोर बहुत अजीब लगते थे.

उनकी पीठ पर स्पाइक्स थे, या उनके सिर पर सींग थे,
या उनकी पूंछ पर वार करने के लिए गदे (क्लब) थे.

टायरानोसोरस रेक्स जैसे डायनासोर भयंकर राक्षस थे.
वे घर जितने ऊँचे थे, और कार की तरह तेज़ दौड़ सकते थे.
उनके दांत खंजर जितने लंबे और नुकीले होते थे.





इस बीच, उन नन्हे प्यारे चमड़ी पर बाल वाले जीवों ने खुद को छिपा लिया.

वे रात में ही बाहर निकलने की हिम्मत करते थे जब डायनासोर सो रहे होते थे.

वे पहले स्तनधारी थे.

कुछ छोटे, हल्के डायनासोरों ने भी पंख उगाए.

उन्होंने पाया कि वे पंखों की मदद से एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक उड़ सकते थे.

वे पहले पक्षी थे.

पर आकाश में पक्षी अकेले नहीं थे.

कुछ अन्य सरीसृप पहले ही आकाश में उड़ रहे थे.

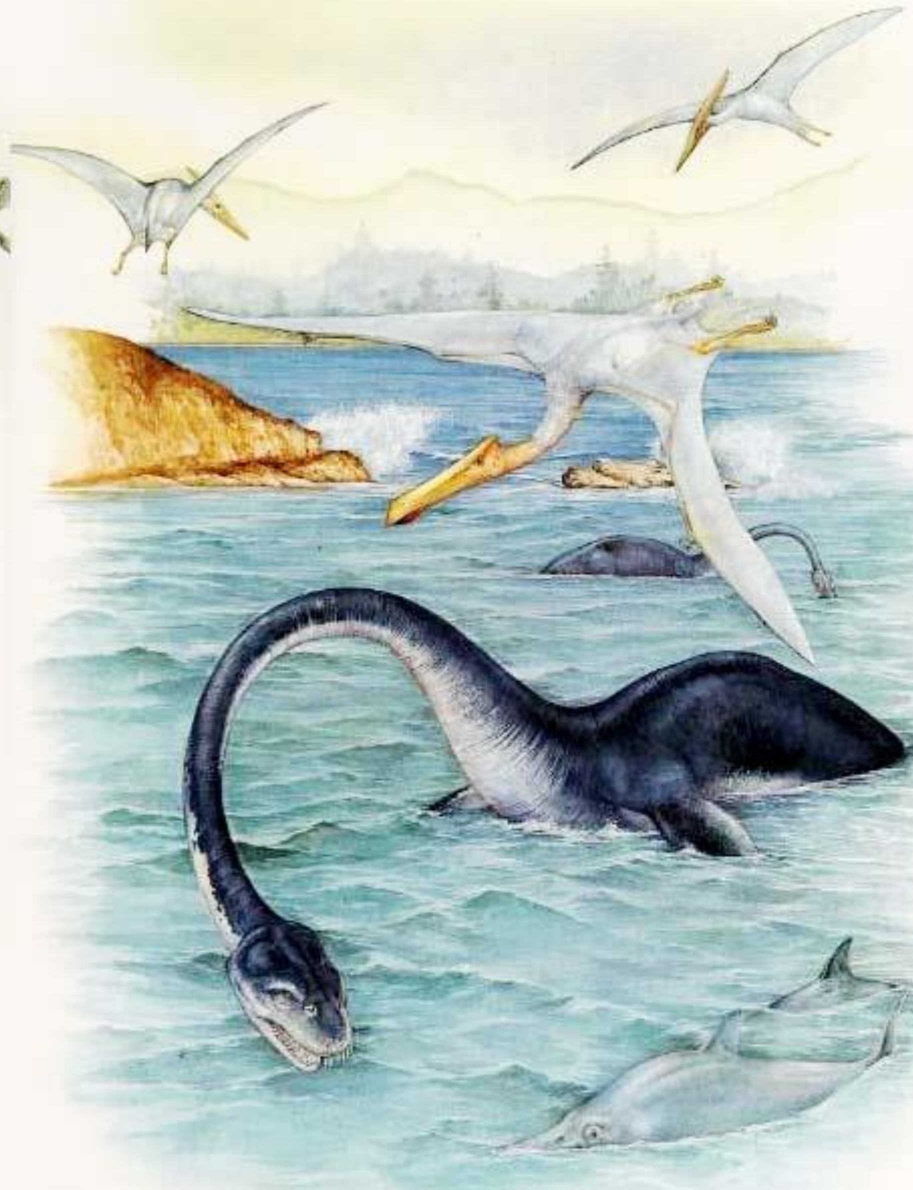
उनके पंख उनकी त्वचा से बने थे और उनके लंबी,
शक्तिशाली चोंच वाले बड़े सिर थे.

इनमें से कुछ उड़ने वाले सरीसृपों का आकार
छोटे हवाई जहाजों के आकार जितना था.

सरीसृप समुद्र में भी रहते थे. कुछ मछलियों की तरह लगते थे.

उन्होंने तेजी से तैरने के लिए मीन-पंख (फिन्स) और मछली की पूंछ उगाई.

कुछ की लंबी, सांप जैसी गर्दनें थीं.





फिर एक दिन सारे डायनासोर पृथ्वी से गायब हो गए.

ऐसा क्यों हुआ? सच में यह कोई नहीं जानता है.

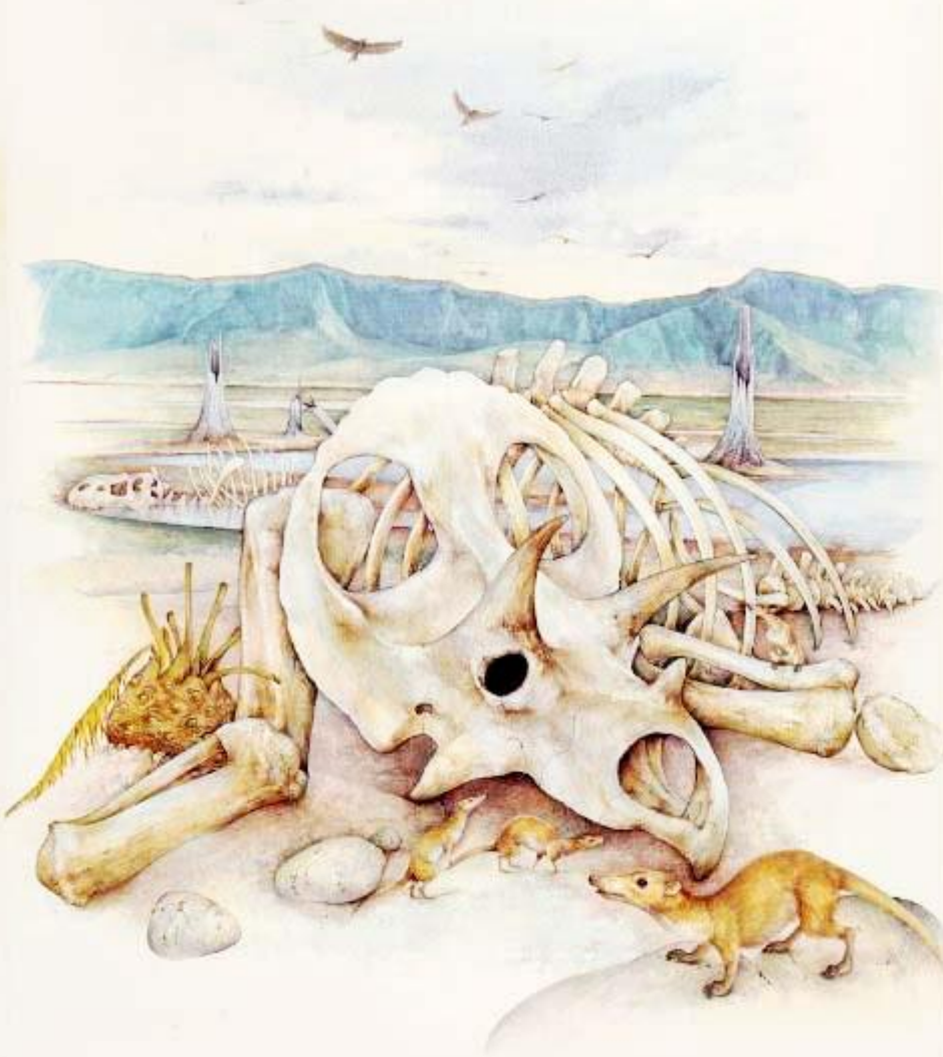
शायद बाहरी अंतरिक्ष से कोई विशाल चट्टान या बर्फ का पिंड
हमारी पृथ्वी से आकर टकराया हो.

तब उस विस्फोट से निकलने वाली धूल और धुएं ने दुनिया को
कई सालों तक पृथ्वी को अंधेरे में डुबो दिया होगा.

शायद फिर मौसम डायनासोर के ज़िंदा रहने के लिए बहुत ठंडा हो गया होगा.

अब अंत में स्तनधारी जीव अपने छिपने के स्थानों से बाहर आ सकते थे.





लाखों, करोड़ों साल बाद...

पृथ्वी पर अनेकों प्रकार के स्तनधारी जीव थे.

वो देखने में आज के चिड़ियाघरों में दिखने वाले जानवरों जैसे ही थे.

उनमें ऐसे हाथी भी थे जिनके दांत
आगे की बजाए पीछे की ओर मुड़े हुए थे.

ऐसे जिराफ थे जिनकी गर्दन बहुत छोटी थी.

बिल्लियों के आकार के घोड़े थे.
गिनी-सूअरों के आकार के दरियाई घोड़े थे.

तब पक्षी पेड़ों में गाते थे और फूलों पर कीड़े मँडराते थे.

लेकिन अभी भी पृथ्वी पर कोई मनुष्य नहीं थे.



और फिर लाखों साल बाद.

भयंकर बर्फ पड़ी.



बर्फ दुनिया के कई हिस्सों में फैल गई. जंगल और घास के मैदान,
मैदान और घाटियाँ, तराई के इलाके सभी मोटी बर्फ से ढक गए.

फिर जानवर केवल उन्हीं जगहों पर रह सकते थे जहां पर बर्फ नहीं पहुंची थी.

पूरे साल बहुत ठंड और सर्दी पड़ती थी.



ऊनी गैंडों के पास गर्म रखने के लिए एक मोटी चमड़ी होती थी.

भालू पूरी सर्दी गुफा में सोकर खराब मौसम से बचते थे.



बर्फ साम्राज्य का सबसे शक्तिशाली प्राणी "मैमथ" था.

फिर भी वो एक बहुत छोटे जानवर से डरता था.

इस जानवर के सींग या नुकीले दांत नहीं थे,
लेकिन उसके पास नुकीले पत्थरों के ब्लेड वाले भाले थे.

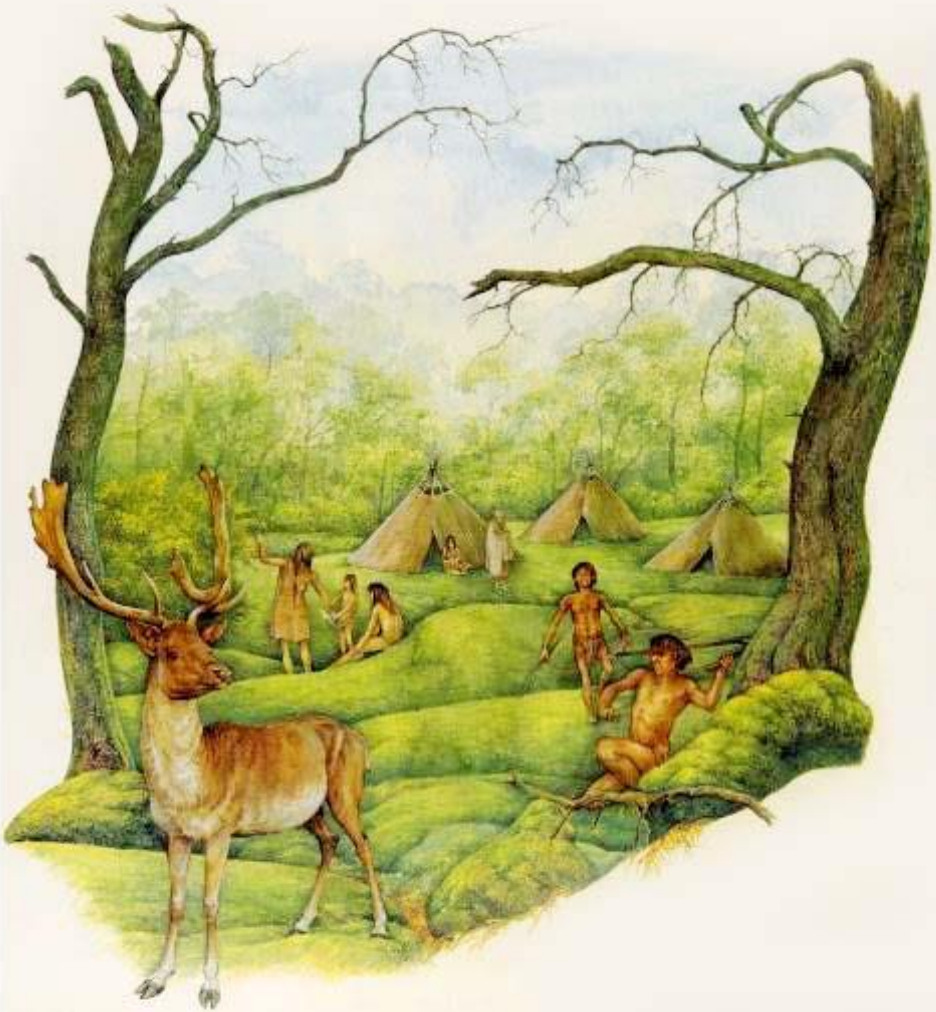
अब पृथ्वी पर मनुष्य आ गए थे.



सबसे पहले, मनुष्यों को भी अन्य सभी जानवरों की तरह,
जंगल में भोजन की तलाश के लिए जाना पड़ता था.

उन्होंने जंगल में शिकार किया, मछली पकड़ी और फल और बेर इकट्ठे किए.

वे गुफाओं में या पेड़ों की शाखाओं और जानवरों की खाल से बने तंबुओं में रहते थे.





तब कुछ लोगों ने पौधे उगाना सीखा.
उसका उपयोग उन्होंने अपना भोजन उगाने के लिए किया.

उन्होंने कुछ जंगली जानवरों को भी अपने वश में किया
और उन्हें पालतू बनाया.

अब लोगों को खाने के लिए चीजों की तलाश में भटकना नहीं पड़ता था.

वे अब गाँव बनाकर रह सकते थे. अब वे एक ही जगह पर रह सकते थे.



हजारों साल बीत गए. फिर लोगों की संख्या बढ़ी. गावों की भी संख्या बढ़ी.

लोगों ने फसल उगाने के लिए और अपने जानवरों के लिए बहुत पेड़ काटे.

लोग बंदूकों से जानवरों का शिकार करने लगे और मछलियों को बड़े-बड़े जालों से पकड़ने लगे.

उसके बाद कुछ गाँव, कस्बों और फिर शहरों में विकसित हुए.

लोगों ने रेलवे, सड़कें, पुल और हवाई-अड्डे बनाए.

उन्होंने जमीन में बड़े-बड़े गड्ढे खोदे.

मनुष्यों को और जगह चाहिए थी.

जंगल में रहने वाले जानवरों को भी जगह की जरूरत होती है.

लेकिन आमतौर पर मनुष्यों का दबदबा चलता था.

आज बहुत सारे जानवर अपने घर खो चुके हैं.



किसी दिन, डायनासोर की तरह अलग-अलग प्रजातियों के कई जानवर भी हमेशा के लिए लुप्त हो सकते हैं.

हमें अपनी दुनिया और अपने साथ रहने वाले जानवरों की देखभाल करने की ज़रुरत है. इसलिए पृथ्वी पर जीवन की कहानी चलती रहेगी.



समाप्त